

विचार बिन्दु

विचित्र बात है कि सुख की अभिलाषा मेरे दुःख का एक अंश है। —खलील जिब्रान

बदलते ज़माने में टीवी चैनलों का अनिश्चित भविष्य

एक समय जिस टीवी ने भारत में प्रिन्ट मीडिया और रेडियो के सामने जबरदस्त चुनौती खड़ी की थी, वह अब खुद अपने को चुनौतियों से घिरा पा रहा है। देश में टीवी चैनलों का भविष्य इस समय बहुत दिलचस्प मगर अनिश्चित मोड़ पर खड़ा है। नई तकनीक, दर्शकों की बदली हुई पसंद, और इंटरनेट की पहुंच ने टीवी इंडस्ट्री के सामने बड़ी चुनौती खड़ी कर दी है। परंपरागत समाचार टीवी चैनलों की गिरती लोकप्रियता ने उन्हें बाध्य किया है कि वे बड़े व्यावसायिक कारपोरेट घरानों के हाथों में चले जाएं। दूसरी तरफ मनोरंजन वाले टीवी चैनलों के टीआरपी आधारित ड्रामों के कंटेंट से दर्शक अब ऊबने लगे हैं। स्मार्टफोन की डिजिटल क्रांति ने भी टीवी चैनलों पर गहरी मार की है। शहरी और युवा दर्शक अब टीवी चैनलों के बजाय ओटीटी प्लेटफॉर्मस पर फिल्में और टीवी सीरियल देखने को प्राथमिकता दे रहे हैं। घरों में सीमित रहने वाले अथेड ही अधिकतर अपने टीवी स्क्रीन पर चिपके हुए पाये जाते हैं। बाज़ार में अपने भविष्य को सुरक्षित करने के लिए समाचार टीवी चैनलों के संचालकों को ‘ग्राहम टाइम’ में मजबूत लगाना सुरक्षित लगता है, जिसमें एंकर परंपरागत निष्पक्ष मध्यस्थ की भूमिका में सामने नहीं आता बल्कि रण के सैनिक के रूप में प्रस्तुत होता है। तेज़ रफ्तार से बदलती प्रौद्योगिकी को देखते हुए ऐसा सोचने वाले भी कम नहीं हैं कि भविष्य में टीवी चैनल डिजिटल ब्रांड्स में बदल जाने वाले हैं, और वे शायद केवल मोबाइल ऐस पर मौजूद मिले। आश्चर्य नहीं कि लगभग हर बड़ा टीवी नेटवर्क अब अपना खुद का ओटीटी प्लेटफॉर्म भी लेकर आ रहा है।

विश्लेषणों का कहना है कि स्मार्ट टीवी ऐप्स और स्ट्रीमिंग सेवाएं युवा वर्ग को खूब बा रही हैं, जिससे नियमित चैनल सर्फिंग कम होती जा रही है। यूट्यूब, इंस्टाग्राम, रील्स, और टिक-टॉक जैसे प्लेटफ़ॉर्म के साथ टीवी चैनलों को प्रतिस्पर्धा हो रही है। खास तौर पर मनोरंजन, समाचार और जीवनशैली के कंटेंट के लिए यह प्रतिस्पर्धा जबरदस्त है। यही सब चीज़ें टीवी चैनलों के लिए नई चुनौतीयां बन कर खड़ी हैं। बाज़ार की समझ रखने वाले कहते हैं कि पारंपरिक प्रसारकों को भविष्य में कंटेंट क्रिएटर्स के साथ सहयोग करना पड़ सकता है। इस संभावना से भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि ‘मोबाइल-फ़र्स्ट’ व्यवस्था के साथ तैयार किये गये शॉर्ट-फ़ॉर्म कंटेंट वाले चैनल उभर सकते हैं क्योंकि यह भी स्पष्ट लग रहा है कि युवा दर्शकों का रुझान शॉर्ट फॉर्म कंटेंट की ओर हो रहा है। फिर भी टीवी को पूरी तरह खारिज नहीं किया जा सकता। जिस प्रकार टीवी के हमले को झेलते हुए अखबार और रेडियो अपना स्थान बनाए रख पाये हैं उसी प्रकार टीवी भी नई चुनौतियों के सामने अपना वजूद बनाए रख ही लेगा। इसका एक बड़ा कारण है ग्रामीण भारत में टीवी की पकड़ का अब भी मजबूत बना होना। भारत के गांवों और कस्बों में अभी भी लोग डीटीएच और केबल के जरिए टीवी ज्यादा देखते हैं। गावों में लोगों की आर्थिक हालत सुधर रही है। उभरती हुई ग्रामीण अर्थव्यवस्था को देखते हुए बाज़ार के उत्पादकों तथा सेवा प्रदाताओं को ग्रामीण इलाकों में बड़ा बाज़ार नजर आ रहा है। ग्रामीण उपभोक्ताओं तक पहुंच बनाने के लिए अभी टीवी चैनल प्रमुख माध्यम बने हुए हैं। इसलिए बाज़ार विश्लेषणों का मानना है कि टीवी चैनल अभी पूरी तरह खत्म नहीं होंगे। इतना ज़रूर है कि अपना वजूद बनाए रखने के लिए वे ग्रामीण और बुजुर्ग वर्ग पर केंद्रित होते चले जा सकते हैं।

वक्ता और टेक्नोलॉजी ने चीज़ों को हमेशा बदला है। इस दौर में भी बदलाव आ रहे हैं। मगर अब बदलाव की गति बहुत तेज़ हैऔर टीवी चैनल्स भी इससे अछूते नहीं रह सकते हैं। अब क्योंकि अर्थव्यवस्था पूरी तरह बाज़ार की पूंजी पर आधारित हो गई है इसलिए टीवी चैनलों पर भी बाज़ार का दबाव होना स्वाभाविक ही है। यही कारण है कि इन दिनों मीडिया संस्थान ज्यादातर व्यवसायिक दृष्टिकोण से संचालित होते हैं। क्योंकि एलेक्ट्रॉनिक मीडिया में टेलीविजन रेटिंग प्लाईट्स (टीआरपी) पर विज्ञापन की आय निर्भर करती है इसलिए उस पर ध्यान केंद्रित करना ही पड़ता है। इस दबाव के कारण समाचार चैनलों को सच्चाई और निष्पक्षता से समझौता करते हुए खबरों को सनसनीखेज तरीके से प्रस्तुत करना पड़ता है और उनको

बाज़ार विश्लेषकों की मानें तो भविष्य में केवल वही टीवी चैनल टिक पाएंगे जो अपने कंटेंट को नए जमाने के अनुसार अपडेट करते रहेंगे। आने वाले समय में डिजिटल तकनीक की पकड़ और गहरी होती चली जाने वाली है जिससे हाइपर-पर्सनलाइजेशन और कृत्रिम बुद्धि एआई का उपयोग बढ़ जाने वाला है। भविष्य में एआई की मदद से कंटेंट को दर्शकों की पसंद के हिसाब से कस्टमाइज़ किया जाएगा।

चैनल अनेक वर्जनाएं भी तोड़ रहे हैं। विवाहेतर सम्बन्ध, स्वच्छंद यौन आचरण, बोलचाल में अश्लील गालियों का प्रयोग, वीभत्स हिंसा जैसी चीज़ें अब आम हो चली हैं। यह भारतीय समाज में आ रहे बदलाव के संकेत है या समाज को बदलने के प्रयास है अज्ञ पर मिलिजुली प्रतिक्रियाएं हैं।

एक चो़ज स्पष्ट नज़र आती है कि डिजिटल अर्थ ज़मान पर यूट्यूबवर्गों के चैनल ,पॉडकास्ट और ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म पर प्रदर्शित हो रहे अधिकतर कंटेंट समाज के उस नववर्णाड्य वर्ग पर केंद्रित होते हैं जो बाज़ार के तिलस्स से मोहित हैं तथा जिनकी जेब में अचानक ख़ुब पैसा आ गया है। मध्यम वर्ग की नई पढ़ी-लिखी पीढ़ी जो ‘जेन-जी’ के विशाेषण से पश्चानी जाती है, इसी वर्ग में शामिल होने को आतुर है। उनकी नई पनपी संस्कृति विभिन्न रूपाों में हमारे सामने प्रकट होने लगी है। इस पीढ़ी को वर्जनाएं तोड़ना और अब तक वर्जित रही बातें करना और सुनना थ़िल देता है। यह वह पीढ़ी है जो बाज़ारवाद वाली खुली अर्थव्यवस्था में पनपी है। पश्चिम की संस्कृति ने नये सोशल मीडिया के जरिए इस जेन-जी पीढ़ी में तेजी से पांव पसारे हैं। सोशल मीडिया की आभासी दुनिया ही जेन-जी के लिए असली दुनिया हो गई है। टीवी चैनलों के सामने यह चुनौती है कि इस पीढ़ी को लुभाने के लिए अपना उत्पाद कैसा कंटेंट वाला बनाए जो बाज़ार में उन्हें भरपूर मुनाफ़ा कमा कर दे। किसी ने कहा है कि टीवी चैनल बाज़ारू कंटेंट बनाने और बेचने को शापित हैं। हिंदुस्तान में जेन-जी की नई संस्कृति में लिपटे नववर्णाड्य वर्ग में शामिल होने को आतुर युवाओं को लगता है कि ऐसे कंटेंट बनाकर मुफ़्त प्लेटफ़ॉर्म पर चला कर वे कमाई का साधन हासिल कर सकते हैं। इनमें पत्रकारिता को व्यवसाय मानने वाले भी धड़ाधड शामिल हो रहे हैं। उनके लिए समाचार भी मनोरंजन का व्यवसाय है। पत्रकारिता में गहरी और तथ्यपूर्ण रिपोर्टिंग के लिए समय और संसाधनों की आवश्यकता होती है, जो इसी के चलते अब बहुत कम हो गये हैं। आज का युग बहुतां के लिए फास्ट-फूड जैसी पत्रकारिता का हो चला है जहां खबरों को जल्दी से जल्दी प्रसारित करने का दबाव होता है। ऐसा करते हुए यह परवाह नहीं होती कि कहीं गलत जानकारी या अणुष्ट खबरें तो नहीं चलाई जा रही हैं। टीवी चैनलों को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मस पर तेजी से फैलने वाली सूचनाओं और बिना सत्यापित जानकारी का मुकाबला करना पड़ रहा है और वे भी उसी धारा में जाने-अनजाने बहे जा रहे हैं।कई बार टीवी चैनलों को बिना जांचे-परखे खबरें इसलिए प्रसारित करनी पड़ती हैं, ताकि सोशल मीडिया के मुकाबले में वे पिछड़ न जाएं। ऐसा अन्य मीडिया में भी हो रहा है। पारंपरिक मीडिया पर लोगों के घटते भरोसे का यह भी एक कारण है।

टीवी चैनलों का मुनाफ़े का मॉडल मीडिया संस्थानों को व्यापारिक हितों या बाहरी दबावों में काम करने को बाध्य करता है। इससे उनकी स्वतंत्रता से काम करने में बाधा आती है। इसका परिणाम यह होता है कि केवल एक दृष्टिकोण से ही प्रस्तुत की जाने वाली खबरें किसी विशिष्ट पक्ष के दायकों के लिए तो आनंददायी होती हैं, किन्तु उससे अन्य दर्शकों का भरोसा टूटता है। पत्रकारिता के बुनियादी सिद्धांतों – जैसे निष्पक्षता, सत्यता, और निष्कलंकता–का पालन अब पहले जितना नहीं हो पाता है। बाज़ार विश्लेषणों की मानें तो भविष्य में केवल वही टीवी चैनल टिक पाएंगे जो अपने कंटेंट को नए जमाने के अनुसार अपडेट करते रहेंगे। आने वाले समय में डिजिटल तकनीक की पकड़ और गहरी होती चली जाने वाली है जिससे हाइपर-पर्सनलाइजेशन और कृत्रिम बुद्धि एआई का उपयोग बढ जाने वाला है। भविष्य में एआई की मदद से कंटेंट को दर्शकों की पसंद के हिसाब से कस्टमाइज़ किया जाएगा। बाज़ार नये ज़माने और नयी प्रौद्योगिकी का मांहा के अनुरूप अपने उत्पादों में बदलाव लाने में माहिर होता है। इसीलिए घरों में टीवी भी स्मार्ट हो रहे हैं, जिन पर दिखने वाला कंटेंट रिगल-टाइम में बदल सकता है, उसी प्रकार जैसे मोबाइल फोन में हुआ है। दूसरी तरफ चैनलों पर भी अपने कंटेंट को छोटा, तेज़, और मोबाइल-फ़्रेंडली बनाने का दबाव बढ़ता जा रहा है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि भारत में टीवी चैनलों का भविष्य डिजिटल और मोबाइल-फोकस्ड है। विश्लेषकों का अनुमान है कि जो टीवी चैनल तकनीक, कंटेंट और दर्शकों की पसंद के साथ बदलेंगे और दर्शकों की पसंद को बदलेंगे वही टिकेंगे। बाकी सिर्फ इतिहास बनकर रह जाएंगे।

—अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा (वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

राशिफल

बुधवार 2 जुलाई, 2025

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत २०८२, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र दिन ११:०७ तक, वारियान योग सायं ५:४६ तक, वणिज करण दिन ११:५९ तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।
ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।
आज सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ११:०७ से सूर्योदय तक है। आज भद्रा दिन ११:५९ से रात्रि १:०३ तक है। आज सूर्य पूजा है।
श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से ९:०६ तक, शुभ १०:४३ से १२:३१ तक, चर ३:५५ से ५:३८ तक, लाभ ५:३८ से सूर्यास्त तक।
राहुकाल: १२:०० से १:३० तक। सूर्योदय ५:४१, सूर्यास्त ७:२०

पाश्चात्य विचार पर आधारित वन एवं वन्यजीव नीति ही दोषपूर्ण



रामपाल जाट

संयुक्त अरब अमीरात सरकार ने शेफिंग फ्यूचर गवर्नमेंट विषय के अंतर्गत वर्ल्ड गवर्नमेंट समिट २०२५ का आयोजन किया था। वर्ष २०३० के बाद के दूरदर्शी मॉडल को विकसित करने के लिए,११ फरवरी २०२५ को शिखर सम्मेलन के दौरान एक कार्यक्रम के रूप में एकसडीजी-२०४५ मंत्री स्तरीय गोलेमेज सम्मेलन का आयोजन किया गया। पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली अपनाते हुए वायुषैव कुटुंबकम की भावना के अनुसार समान वैश्विक साझेदारी, न्याय के सिद्धांतों, समावेशिता और साक्षा प्रगति को बढ़ावा देने के मार्गदर्शक सिद्धांत तैयार करने के लिए चर्चा की। इसमें भारतीय विचार हावी है किंतु जब भारत में नीतियां तैयार की जाती हैं, उनमें पाश्चात्य विचार ही प्रभावी दिखाई देता है। नीतियों से मार्ग निर्धारण होता है।नीतियां दोष पूर्ण होने पर भटकवाव आता है। परिणामतः देश की राजधानी से जम्मु कश्मीर जाने की चाहत वाले भी मुंबई, कोलकाता या तिरुवनंतपुरम पहुंच जाते हैं।

जन-जमीन-जंगल-जानवर परस्पर पूरक है। इसके आधार पर ही सुख-समृधि का मार्ग प्रशस्त होता है। इनमें परस्पर शत्रुता के विचार से विग्रह –अशांति उत्पन्न होती है। भारत से वनों को छीन कर अपनी सैरागाह बनाने वालों ने इस सिद्धांत को नकार दिया तथा इन चारों को एक दूसरे का शत्रु निरूपित कर दिया। वे ही मानव एवं बाघों के मध्य इसे संघर्ष से संबोधित करते हैं, जबकि संघर्ष शब्द के प्रयोग का कोई आधार नहीं है। मानव एवं बाघों के संघर्ष का कारण पर्यावासो एवं निर्धारित क्षेत्र की कमी, भूख -प्यास की व्याकुलता एवं उनके स्वभाव में चिड़चिड़ापन आना भी स्वाभाविक है। इसी का परिणाम है कि राष्ट्रीय उद्यान- बाघपरियोजनारणथम्भोर में दो माह की अवधि में ही बाघों ने तीन मायों की जीवनशैला समाप्त कर दी। तथाकथित पर्यावरणविद् सैरागाह छिन जाने की आशंका से इस अटल सत्य को खंडित करने का प्रयास करते रहते हैं।

भारत के ग्रामीण समाज में दया भाव कूट-कूट कर भरा है।वे जीव मात्र में ईश्वर के दर्शन करते हैं। जिन हिंसा को पाप समझते हैं। जब तक वे वनों की रक्षा करना अपना दायित्व समझते थे

तब तक वन अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित थे। इस दृष्टि से अनेक देवताओं के नाम से वनों की पहिचान है। सर्वाई माधोपुर राष्ट्रीय उद्यान रणथंभोर कटुली नाम के गांव में ‘भैरू जी का वन’ नाम से स्थित जंगल के वृक्षों को कोई छूता भी नहीं था। इतना ही नहीं तो अनेक दुर्लभ जीवों के अंगों को व्यापार में पैसा कमाने का साधन बनाया। आज भी वन विभाग में मांसाहारियों को नौकरी से रोकने का कोई प्रावधान नहीं है। राजस्थान में एक खेजड़ी के पेड़ को बचाने के लिए २६३ शहीद हो गए। फिल्मीजगत की हस्ती को हिरण शिकार में न्यायालय में विचारण का सामना करना पड़ा। यह भारतीयता से औत-प्रोत विचार है। रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान में से १६ गांवों का विस्थापन किया गया, उसके तत्काल बाद शिकार की घटनाओं में बढ़ोतरी हुई।

उन्हीं गांवों में से ७५ वर्ष की आयु पर कर चुके छीतर लाल गुर्जर नेताजी अनुभव के आधार पर बताते हैं कि बाघ और ग्रामीण एक साथ रहते थे। मानव को देखकर बाघ बचकर निकल जाता था तथा मनुष्य भी बाघों को देखकर बचकर निकल जाते थे। बाघ एवं मानव में आपसी समझ थी, इसीलिए एक बार अचानक बाघ के पास जा घमके तो बाघ ने आंखें खोली और वह रास्ते-

रास्ते दूसरी ओर चला गया। तब भी कुछ वनकर्मी तो स्वयं को नायक तथा शाकाहारी ग्रामीणों को खलनायक सिद्ध करने में रत रहते हैं। वे इस प्रकार की रणनीति के कारण वन्य प्रेमी की प्रतिष्ठा से पैसा, पदोन्नति तथा पुरस्कार प्राप्त करते रहते हैं। वन एवं जैवविविधता प्राणी मात्र के जीवन का आधार है, इसलिए वन बर्चें एवं वन्य जीव सुरक्षित रहे, इसमें कोई भी असमहत नहीं है। प्रमुख जैव विविधता हॉटस्पट में से हिमालय, पश्चिमी घाट, पूर्वी उत्तर क्षेत्र और निकोबार दीप समूह है, जो वैश्विक संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण हैं। विश्व में भारत सबसे अधिक जैव विविधता वाले देशों में से एक है। यद्यपि उसका क्षेत्रफल संपूर्ण पृथ्वी का २.४ प्रतिशत ही है। प्रोजेक्ट टाइगर के ५० वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में बाघ संरक्षण के लिए अमृगकाल के दृष्टी पत्र के अनुसार २७ नवंबर २०२३ तक भारत में राष्ट्रीय उद्यान १०६, वन्य जीव अभ्यारण ५७३, संरक्षण रिजर्व ११५ तथा सामुदायिक रिजर्व २२० सहित संरक्षित वन क्षेत्र की संख्या १०१४ है। यह देश के कुल क्षेत्रफल का ५.३२ प्रतिशत है। बाघ अभारण्यों की संख्या ५० तथा क्षेत्रफल ७८,००० वर्ग किलोमीटर है। यह देश के भौगोलिक क्षेत्र का २.३० प्रतिशत है। वर्ष २०२५ में ५० से बहकर बाघ अभयारण्यो की संख्या ५८ हो गयी। नवीनमान रानी दुर्गावती बाघ अभयारण्य मध्य प्रदेश में है। भारत का पहला वन्य जीव अभयारण्य १९३६ में जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान था, जिसे ‘हेली नेशनल पार्क’ के नाम से जाना जाता था। अखिल भारतीय बाघ अनुगमन २०२२ के पांचवें चक्र के अनुसार भारत में बाघों की संख्या औसत ३,६८२ है, जो विश्व के कुल बाघों की संख्या का ७० प्रतिशत है। उनकी वार्षिक वृद्धि दर ६.०१ प्रतिशत है।

वर्तमान में चल रही वन नीति के कारण वनों के पड़ोस में जंगली सुअर, रोजेडे, बन्दर जैसे जानवरों के कारण मक्का, मूंगफली, मूंग, आलू जैसे अतिरिक्त शकंदर, गन्ना जैसे जमीकंदो की खेती समाप्त हुई। वहीं बाघ जैसे जानवरों के हिंसक होने से किसान फसलों की रखावली पर जाने से डरने लगे हैं, इससे फसल उत्पादन निरतिर रूप से प्रभावित होता है। वन नीति बनाने वालों ने इस प्रकार की नीतियों को विकल्पहीनता दर्शित किया हुआ है। जबकि झारखंड राज्य के हजारीबाग जिले के गांव लोचेर के मीनू महतो की परामर्सीपूना पुहार पर भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी

तत्कालीन जिला कलेक्टर सुधीर प्रसाद ने उनके गांव की ६ एकड़ वन विभाग की भूमि पर वर्ष १९९४ में मालदा आम के ३०० पौधे वन विभाग के अधिकारियों द्वारा लगाए थे। उनमें से लगभग आधे पौधे मर गए, तब गांववासियों ने उनके स्थान पर बीजू आम रोप दिए थे। इनके पकने के बाद पूरा गांव आम-आम है। इसी राज्य के बहरागोड़ा पहाड़ पर काजू और नेतरहाट के नीचे तराई क्षेत्र में नाशपाती के पौधे बड़े पैमाने पर लगाए गए। एक ही वर्ष में ४०० से लेकर ५०० मेट्रिक टन नाशपाती कोलकाता तक बिकने जाती है। जिससे सभी ग्रामीण लाभान्वित होते हैं। आकाशीय बिजली गिरने के कारण होने वाली मौतो से सुरक्षा का पेड़ श्रेष्ठ उपाय है। जब वनों के साथ व्यक्ति एवं गांव का हित जुड़ जाता है तो पूरा गांव ही सुरक्षा कर्मियों के रूप में खड़ा हो जाता है। भारत उन देशों में से एक है, जिनके पास वन प्रबंधन की वैज्ञानिक प्रणाली है। जन भागीदारी से वन एवं वन आच्छादित क्षेत्र बढ़ाया जा सकता है। कृषि भूमि में वन आवरण के रूप में खेती किए जाने को वन आच्छादन में सम्मिलित किया जाना श्रेयस्कर है।

भारत में कुल भूभाग में से एक तिहाई वन क्षेत्र था। वर्तमान में २५.७ प्रतिशत रह गया। देश में ४५,००० से अधिक प्रकार के पौधे तथा ९१ हजार प्रकार के जानवर हैं। विश्व के चार प्रमुख जैव विविधता हॉटस्पट में से हिमालय, पश्चिमी घाट, पूर्वी उत्तर क्षेत्र और निकोबार दीप समूह है, जो वैश्विक संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण हैं। विश्व में भारत सबसे अधिक जैव विविधता वाले देशों में से एक है। यद्यपि उसका क्षेत्रफल संपूर्ण पृथ्वी का २.४ प्रतिशत ही है। प्रोजेक्ट टाइगर के ५० वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में बाघ संरक्षण के लिए अमृगकाल के दृष्टी पत्र के अनुसार २७ नवंबर २०२३ तक भारत में राष्ट्रीय उद्यान १०६, वन्य जीव अभ्यारण ५७३, संरक्षण रिजर्व ११५ तथा सामुदायिक रिजर्व २२० सहित संरक्षित वन क्षेत्र की संख्या १०१४ है। यह देश के कुल क्षेत्रफल का ५.३२ प्रतिशत है। बाघ अभारण्यों की संख्या ५० तथा क्षेत्रफल ७८,००० वर्ग किलोमीटर है। यह देश के भौगोलिक क्षेत्र का २.३० प्रतिशत है। वर्ष २०२५ में ५० से बहकर बाघ अभयारण्यो की संख्या ५८ हो गयी। नवीनमान रानी दुर्गावती बाघ अभयारण्य मध्य प्रदेश में है। भारत का पहला वन्य जीव अभयारण्य १९३६ में जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान था, जिसे ‘हेली नेशनल पार्क’ के नाम से जाना जाता था। अखिल भारतीय बाघ अनुगमन २०२२ के पांचवें चक्र के अनुसार भारत में बाघों की संख्या औसत ३,६८२ है, जो विश्व के कुल बाघों की संख्या का ७० प्रतिशत है। उनकी वार्षिक वृद्धि दर ६.०१ प्रतिशत है।

‘पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय शिविर से आमजन को मिल रही राहत’

शिविर में आमजन की समस्याओं सहित नामांतरण के २२ प्रकरणों का निस्तारण किया

भीलवाड़ा, (निर्स)।जिले के शहपुरा क्षेत्र की ग्राम पंचायत गिरिडिया में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पंचवड़ा २०२५ के तहत शिविर का आयोजन किया गया।

जानकारी के अनुसार शिविर प्रभारी विश्वजीत सिंह उपखंड अधिकारी शाहपुरा के नेतृत्व में ग्राम

पंचायत मुख्यालय गिरिडीया पर शिविर का आयोजन हुआ जिसमें सभी विभागों के अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे और आमजन की समस्याओं का मौके पर त्वरित समाधान किया गया।शिविर में राज्यस् विभाग द्वारा मौके पर विभाजन के २ तथा रास्ती के ५, सिपाई प्लाकन के ६,

पथरगद्दी के ३ व नामांतरण के २२ प्रकरणों का निस्तारण किया गया।चंबल पेयजल परियोजना के तहत मौके पर प्राप्त आवेदन में ग्रामों में पेयजल की पाइप लाइन में हो रहे लीकेज को शिविर प्रभारी के निर्देश अनुसार ठीक कराया गया। बिजली विभाग द्वारा लाइन के आसपास पेड़ों

से टहनियां की वजह से ट्रिपिंग की समस्या होने के समाधान किया गया। शिविर में चिकित्सा विभाग द्वारा प्राथी पणू भील को अक्षय रोग किट वितरित किया गया। शिविर प्रभारी ने बताया कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय शिविर से आमजन को राहत मिल रही है, किसानों सहित अन्य

जरूरतमंद लोगों की समस्याओं का त्वरित समाधान हो रहा है। शिविर में समाजसेवी जीएसएस अध्यक्ष देवीलाल जूएर, वीडीओ शंकरलाल मीणा, रेवेन्यू इंस्पेक्टर ओमप्रकाश योगी, पटवारी हिम्मत् सिंह व गोविन्द सिंह आदि सहित कई ग्रामीणा भी उपस्थित रहे।

अजमेर में जर्जर भवनों से हादसे का अंदेशा

अजमेर, (कासं)। देश व प्रदेश में सक्रिय हुए मानसून के चलते तेज बरसात में जर्जर भवन गिरने का खतरा अधिक बना रहता है। जर्जर भवनों के अक्षय बरने वाले लोगों में दहशत का माहौल व्याप्त है। अजमेर शहर के आगरा गेट, नया बाजार, पट्टी कटला सहित आसपास के क्षेत्रों में आधा दर्जन से अधिक जर्जर भवन स्थानीय लोगों के लिए खतरा बने हुए हैं। मंगलवार को क्षेत्रवासियों ने कहा कि कई मकानों

की दीवारों में दरारें आ चुकी हैं, छतें जर्जर हालत में हैं और तेज बारिश या हवा में उनके गिरने की आशंका लगातार बनी हुई है।

आरागेट क्षेत्र की स्थानीय निवासी पार्वती देवी ने बताया कि आगरागेट क्षेत्र के पुराने मोहल्लों में कई मकान ५० से ८० वर्ष से भी अधिक पुराने हैं और वर्षों से मरम्मत के अभाव में जर्जर हो चुके हैं। शारदा देवी ने कहा कि बारिश के मौसम में स्थिति और

- नगर निगम प्रशासन नहीं दे रहा ध्यान, मानसून की बरसात में भवनों के गिरने का डर**
- कई मकानों की दीवारों में दरारें आ चुकी हैं, छतें जर्जर हालत में हैं**

खतराक हो जाती है। बच्चों और बुजुर्गों को लेकर सबसे ज्यादा चिंता रहती है, क्योंकि कोई भी हादसा बड़ी जान माल की हानि का कारण बन

सकता है। पूर्व में जर्जर भवन गिरने के हादसे हो चुके हैं। स्थानीय लोगों ने बताया कि समस्या के समाधान के लिए कई बार नगर निगम को शिकायतें दी

जा चुकी हैं। क्षेत्रवासियों ने निगम अधिकारियों को लिखित में भी अवगत कराया है कि जर्जर भवनों का गिरना कभी भी बड़ी दुर्घटना का कारण बन सकता है, लेकिन इसके बर्नास का प्रभाव अनूबंध प्राप्त होंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रयुक्त बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



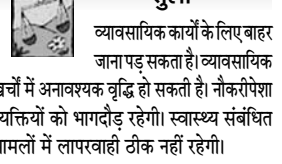
पंडित अनिल शर्मा

कन्या, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।
आज सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ११:०७ से सूर्योदय तक है। आज भद्रा दिन ११:५९ से रात्रि १:०३ तक है। आज सूर्य पूजा है।
श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से ९:०६ तक, शुभ १०:४३ से १२:३१ तक, चर ३:५५ से ५:३८ तक, लाभ ५:३८ से सूर्यास्त तक।
राहुकाल: १२:०० से १:३० तक। सूर्योदय ५:४१, सूर्यास्त ७:२०



मेघ

अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों में लाभवाही ठीक नहीं रहेगी।



तुला

खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदंड रहेगी। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लाभवाही ठीक नहीं रहेगी।



वृष

व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।



वृश्चिक

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित ख़ोत से धन प्राप्त होगा।



मिथुन

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में धार्मिक-मार्गलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।



धनु

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वातां सफल रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित ख़ोत से धन प्राप्त होगा।



कर्क

परिवार में मन को प्रसन करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



मकर

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटके हुए कार्य बने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।



सिंह

आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रतासुगमता से बने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।



कुंभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में बिगड़ हो सकता है। आज नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है।



कन्या

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रयुक्त बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



मीन

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मार्गलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

प्रतिशत एवं यह वृद्धि २०२४ –२५ के संशोधित अनुमानों से १८ प्रतिशत अधिक है। त